International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 4, July 2020 |

सामाजिक परिवर्तन में शिक्षित महिलाओ की भूमिका: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (बरेली जनपद की हिंदू महिलाओ के संदर्भ में)

[1]DR. SWATI RANI , [2]DR. SHIVARAJ KUMAR, [3]DEEPAK KUMAR

[1]Assistant Rotary (PG) Institute of Management and Technology, Chandausi, Sambhal, India

[2]Associate Professor and Head of Dept. , Teachers Education, NM Dass (PG) College, Budaun, India

[3]Principal, Radha Krishna Institute of Technology and Management, Talheri Buzurg, Saharanpur, India

सार

स्त्री शिक्षा स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरुषों की ही तरह शामिल करने से सम्बन्धित है। दूसरे रूप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को सन्दर्भित करता है। भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिये जितना कि पुरुष हो। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता [1] शिक्षित न होगी तो देश की सन्तानो का कदापि कल्याण नहीं हो सकता।

परिचय

स्वरूप और महत्व

बरेली जनपद की हिंदू महिलाओ के संदर्भ में शिक्षा वयस्क जीवन के प्रति स्त्रियों के विकास के लिए एक आधार के रूप में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा अन्य अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए लड़कियों और महिलाओं को सक्षम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बहुत सी समस्याओं को पुरुषों से नहीं कह सकने के कारण महिलाएँ कठिनाई का सामना करती रहती हैं। अगर महिलाएँ शिक्षित हों तो वे अपने घरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय विकास में मदद करता है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में मदद करती है।[1]

समस्याएँ

बरेली जनपद[2] की हिंदू महिलाओ के संदर्भ में रूढ़िवादी सांस्कृतिक दृष्टिकोण के कारण लड़कियों को अक्सर पाठशाला जाने की अनुमति नहीं दी जाती है। इसका एक कारण गरीबी भी देखा जा सकता है क्योंकि घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण भी माता-पिता अपने सभी बच्चों को शिक्षा देने में असमर्थ होते हैं जिसके कारण वे अपने बच्चों को स्कूल नहीं भेज पाते और लड़कियों को भी अपने साथ मजदूरी पर ले जाना पड़ता है।

भारत में स्त्री शिक्षा

भारत में वैदिक काल से ही स्त्रियों के लिए शिक्षा का व्यापक प्रचार था। मुगल काल में भी अनेक महिला विदुषियों का उल्लेख मिलता है।

पुनर्जागरण के दौर में भारत में स्त्री शिक्षा को नए सिरे से महत्व मिलने लगा। ईस्ट इंडिया कंपनी के द्वार सन 1854 में स्त्री शिक्षा को स्वीकार किया गया था। विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी प्रयासों के कारण साक्षरता के दर 0.2% से बदकर 6% तक पहुँच गया था। कोलकाता विश्वविद्यालय महिलाओं को शिक्षा के लिए स्वीकार करने वाला पहला विश्वविद्यालय था। 1986 में शिक्षा संबंधी राष्ट्रीय नीति प्रत्येक राज्य को सामाजिक रूपरेखा के साथ शिक्षा का पुनर्गठन करने का निर्णय लिया था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात सन 1947 से लेकर भारत सरकार पाठशाला में अधिक लड़कियों को पढ़ने का मौका देने के लिये, अधिक लड़कियों को पाठशाला में दाखिला करने के लिये और उनकी स्कूल में उपस्थिति बढ़ाने की कोशिश में अनेक योजनाएँ बनाए हैं जैसे कि नि:शुल्क पुस्तकें, दोपहर की भोजन आदि।

जोन इलियोट ने पहला महिला विश्वविद्यालय खोला था। सन् 1849 में और उस विश्वविद्यालय क नाम बीथुने कालेज था।[1]

सन् 1986 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पुनर्गठन देने को सरकार ने फैसला किया। सरकार ने राज्य कि उन्नती की लिये, लोकतंत्र की लिये और महिलाओं का स्थिति को सुधारने की लिये महिलाओं को शिक्षा देना ज़रूरी समझा था। भारत की स्वतंत्रता के बाद सन् 1947 में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग को बनाया गया। आयोग ने सिफारिश किया कि महिलाओं कि शिक्षा में गुणवता में सुधार लिया जाए। भारत सरकार ने तुरन्त ही महिला साक्षारता की लिये साक्षर भारत मिशन की शुरूआत किया था।

इस मिशन में महिलाओं की अशिक्षा की दर को नीचे लाने की कोशिश की गई है। बुनियादी शिक्षा उन्हें अनिवार्य है और अपने स्वयं के जीवन और शरीर पर फैसला करने का अधिकार देने, बुनियादी स्वास्थ्य, पोषण और परिवार नियोजन की समझ के साथ लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा प्रदान हो रही है।

लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा गरीबी पर काबू पाने में एक महत्वपूर्ण कदम है। कुछ परिवारों का काम कर रहे पुरुष दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटनाओं में विकलांग हो जाते हैं। उस स्थिति में, परिवार का पूरा बोझ परिवारों की महिलाओं पर टिका रहता है। महिलाओं की ऐसी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए उन्हे शिक्षित किया जाना चाहिए। वे विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर [2]सकती हैं। महिलाएँ शिक्षकों, डॉक्टरों, वकीलों और प्रशासक के रूप में काम कर रही हैं। शिक्षित महिलाएँ अच्छी माँ बन सकती हैं। महिलाओं की शिक्षा से दहेज समस्या, बेरोज़गारी की समस्या, आदि सामाजिक शांति से जुड़े मामलों को आसानी से हल किया जा सकता है।

बरेली जनपद की हिंदू महिलाओ के संदर्भ में स्त्री शिक्षा की भूमिका

संस्कृत में यह उक्ति प्रसिद्ध है- 'नास्ति विद्यासमं चक्षुर्नास्ति मातृ समोगुरुः'. इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में विद्या के समान नेत्र नहीं है और माता के समान गुरु नहीं है।' यह बात पूरी तरह सच है। बालक के विकास पर प्रथम और सबसे अधिक प्रभाव उसकी माता का ही पड़ता है। माता ही अपने बच्चे को पाठ पढ़ाती है। बालक का यह प्रारंभिक ज्ञान पत्थर पर बनी अमिट लकीर के समान जीवन का स्थायी आधार बन जाता है। लेकिन आज पूरे भारतवर्ष में इतने असामाजिक तत्व उभर आए हैं, जिन्होंने मां-बहनों का रिश्ता खत्म कर दिया है और जो भोग-विलास[3] की जिंदगी जीना अधिक उपयोगी समझने लगे हैं। यही कारण है कि कस्बों से लेकर शहरों की मां-बहनें असुरक्षित हैं।

असुरक्षा के कारण ही बलात्कार और सामूहिक बलात्कार जैसी अनेक घटनाओं के जाल में फँसकर महिलाओं का जीवन नर्क बन चुका है। वास्तव में कहा जाता है कि महिलाओं की शिक्षा, किसी भी पुरुष की शिक्षा से कम महत्वपूर्ण नहीं है। समाज की नई रूपरेखा तैयार करने में महिलाओं की शिक्षा पुरुषों से सौ गुना अधिक उपयोगी है। इसलिए स्त्री शिक्षा के लिए सरकार को प्रयासरत होना चाहिए। तभी अत्याचार जैसी घटनाओं पर काबू पाया जा सकता है।

लाभ

बरेली जनपद की हिंदू महिलाओ के संदर्भ में शिक्षा प्राप्त करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का अर्थ यह नहीं है कि नारी शिक्षित होकर पुरुष को अपना प्रतिद्वन्द्वी मानते हुए उसके सामने ही मोर्चा लेकर खड़ी हो जाए। बल्कि वह आर्थिक क्षेत्र में भी पुरुष के बराबर समानता का अधिकार प्राप्त करके उसके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध के समीकर्ण बनाने में सक्षम बने। जिस प्रकार शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। अगर नारी ही शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहिणी बन [4]सकेगी और न कुशल माता। समाज में बाल-अपराध बढ़ने का कारण बालक का मानसिक रूप से विकसित न होना है। अगर एक माँ ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों का सही मार्गदर्शन करके उनका मानसिक विकास कैसे कर पाएगी और एक स्वस्थ समाज का निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं हो सकेगा। अतः यह कहा जा सकता है कि शिक्षित नारी ही भविष्य में निराशा एवं शोषण के अन्धकार से निकलकर परिवार को सही राह दिखा सकती है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरुषों की ही तरह शामिल करने से संबंधित है। दूसरे रूप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को संदर्भित करता है। भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरुषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्व मान्य है कि स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिये जितना कि पुरुष हो। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश की सन्तानो का कदापि कल्याण नहीं हो सकता।

स्वरूप और महत्व

बरेली जनपद की हिंदू महिलाओ के संदर्भ में शिक्षा वयस्क जीवन के प्रति स्त्रियों के विकास के लिए एक आधार के रूप में विशेष रूप[5] से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा अन्य अधिकारों को सुरक्षित करने के लिए लड़कियों और महिलाओं को सक्षम करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बहुत सी समस्याओं को पुरुषों से नहीं कह सकने के कारण महिलाएं कठिनाई का सामना करती रहती हैं। अगर महिलाएँ शिक्षित हों तो वे अपने घरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती हैं। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय

और अंतराष्ट्रीय विकास में मदद करता है। आर्थिक विकास और एक राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि में मदद करता है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण में मदद करती है। महिला शिक्षा पर सरकार को जोर देना चाहिए।

विचार-विमर्श

ऐतिहासिक रूप से महिलाएँ जीवन के सभी क्षेत्रों में साहस और उत्साह से भाग लेती रही हैं। भारत की शिक्षा व्यवस्था भी इसका अपवाद नहीं है। भारत के पौराणिक ग्रंथों में उच्च शिक्षित महिलाओं का वृहद उल्लेख आता है। यहाँ तक की भारत में शिक्षा की देवी के रूप में एक महिला ही पूजनीय मानी जाती है। प्राचीन भारतीय शिक्षा के ऐतिहासिक प्रमाण[6] तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से देखे जा सकते हैं। उस समय शिक्षा मौखिक दी जाती थी और महिलाओं का उसमें प्रतिनिधित्व होता था। जब भारत में बौद्ध धर्म का प्रसार हुआतब नालंदा, विक्रमशिला और तक्षशिला जैसे विश्व प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान स्थापित हुए। शोध से विदित होता है कि महिलाएँ भी इन संस्थानों में शिक्षा ग्रहण करती थीं। ये शिक्षण संस्थान पाँचवी शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक खूब फले-फूले। धर्मशास्त्र, दर्शन, ललित कला, खगोल विज्ञान इत्यादि में महिलाओं की सहभागिता थी।लेकिन उस काल में शिक्षा समाज के एक वर्ग विशेष तक ही सीमित थी, सभी की पहुँच शिक्षा तक नहीं थी।20वीं शताब्दी की शुरूआत में महिलाओं के लिए शिक्षा पर जोर दिया गया ताकि वे अपनी संतान को शिक्षित कर राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग दे सकें।1906 में सरोजिनी नायडू ने एक सभा को संबोधित करते हुए महिला शिक्षा के महत्व को रेखांकित किया। इस मसय तक महिलाएँ काफी बड़ी संख्या में सार्वजनिक जीवन में भाग लेने लगी थीं। रमाबाई रानाडे, सरोजनी नायडू, एनी बेसेंट, रामेश्वरी नेहरू, राजकुमारी अमृत कौर, अरूणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, उषा मेहता और वैष्णवी देवी जैसी महिलाओं ने महत्वपूर्ण राजनीतिक और सामाजिक भूमिकाओं का निर्वहन किया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महिलाओं की शिक्षा, विशेष रूप से उच्च शिक्षा की नई शुरूआत हुई। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू का कहदना था कि आप महिलाओं की स्थिति को देखकर किसी राष्ट्र की स्थिति का आकलन कर सकते हैं। उनका मानना था कि महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा समय की मांग है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आज भारतीय महिलाओं की भागीदारी काफी अधिक है और इसमें उतरोत्तर वृद्धि हो रही है। इसका कारण नौकरी की[7] उच्च आकांक्षा और माता-पिता का समर्थन है।

बरेली जनपद की हिंदू महिलाओ के संदर्भ में आज महिलाओं की भूमिकाओं ने विद्यालयों, कॉलेजों, कार्यालयों, न्यायालयों, पुलिस स्टेशनों, अस्पतालों, होटलों और व्यावसायिक प्रतिष्ठनों का लिंग परिदृश्य बदल दिया है। महिलाएँ हर जगह हैं और प्रत्येक क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ रही हैं। देश में बिना किसी संगठित महिला आन्दोलन के यह क्रांति चुपचाप आश्चर्यजनक रूप से आई है। महिलाएँ अब अपने भविष्य की संभावनाएँ तलाशने लगी हैं। माता-पिता द्वारा अपनी ब्रेटियों के प्रति विश्वास और उनकों दी गई स्वतंत्रता यह बताती है कि समय कितनी तेजी से बदला है।

बाहरी दुनिया के साथ संपर्क ने महिलाओं के दैनिक जीवन में उपलब्ध संभावनाओं का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज घर में और घर के बाहर निर्णय करने के लिए महिलाओं की स्थिति या

उनको दी जाने वाली स्वयत्तता उनकी क्षमता पर निर्भर है।

जब महिलाएँ अधिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त करती हैं तो अधिक धनार्जन भी करेंगी। जब महिलाएँ अधिक धनार्जन करेंगी तो वे इसे अपनी संतान की शिक्षा और स्वास्थ्य पर खर्च करेंगी। जब महिलाओं का

आर्थिक स्तर बढ़ेगा तो उन्हें घर में अधिक सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होनी और उनकी आवाज को दबाया नहीं जा सकेगा। जब महिलाओं के प्रभाव में वृद्धि होगी तो वे और प्रशिक्षण तथा अधिक आय प्राप्त करने जैसे अपने अधिकारों की मांग के प्रति अधिक मुखर हो सकेगी। जब महिलाओं की आर्थिक शक्ति में वृद्धि होगी तो उन्हें पुत्र उत्पन्न करने जैसी पारंपरिक रूढ़ियों से मुक्ति मिल सकेगी और दहेज जैसी कुरीति पर लगाम कसने में सहायता मिलेगी। जब पुत्र की आकांक्षा में कमी होगी तो परिवार में लड़कियों की शिक्षा पर जोर दिया जाएगा और विवाह्ठ की आयु भी बढ़ जाएगी। जब स्वस्थ महिला का समय पर विवाह होगा तो उनकी संतान भी स्वस्थ होगी।

आने वाले दशकों में महिलाओं के जीवन में नए अभूतपूर्व अवसरों की सभावना है। नए माहौल से लाभ उठाने के लिए उन्हें सक्षम बनाने हेतु [6]मानव संसाधन विकास के नए प्रारूपों की आवश्यकता पड़ेगी। आने वाली पीढ़ी में निरंतर और रचनात्मक नए विचारों को आत्मात करने की क्षमता होनी चाहिए। उनमें मानवीय मूल्यों और सामाजिक न्याय के प्रति मजबूत प्रतिबद्धता होनी चाहिए। इन सभी के लिए यह अपरिहार्य है कि महिलाओं को बेहतर शिक्षा के अवसर मिलें।

परिणाम

महिलाओं की शिक्षा समाज में स्थिति के परिवर्तन का सबसे शक्तिशाली साधन है। शिक्षा भी परिवार के भीतर स्थिति में सुधार के साधन के रूप में असमानताओं और कार्य में कमी लाती है। सभी स्तरों पर महिलाओं की

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 4, July 2020 |

शिक्षा को प्रोत्साहित करने और ज्ञान और शिक्षा प्रदान करने में लिंग पूर्वाग्रह को कम करने के लिए, राज्य में विशेष रूप से महिलाओं के लिए भी स्कूल, कॉलेज और विश्वविद्यालय स्थापित किए। अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति को शिक्षित करते हैं जिसे आप किसी व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, हालांकि, यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है भारत माता का सशक्तीकरण।

महिलाओं की आर्थिक [7]क्षमता में सुधार के साथ शिक्षा:- अनुसंधान इंगित करता है कि प्रत्येक अतिरिक्त वर्ष एक युवा लड़की स्कूलों में रहती है जो मजदूरी में 10% से 20% की वृद्धि में बदल जाती है। भारत में अध्ययन इस बात की पुष्टि करते हैं कि जिन महिलाओं ने हाई स्कूल पूरा किया था, उन्होंने बिना किसी शिक्षा के एक से डेढ़ गुना अधिक कमाई की और तकनीकी प्रशिक्षण वाली महिलाओं ने अनपढ़ महिलाओं की तुलना में तीन गुना अधिक अर्जित किया।

महिला शिक्षा और जनसंख्या नियंत्रण के साथ इसका जुड़ाव:- महिलाओं की शिक्षा और जनसंख्या वृद्धि की धीमी गति के बीच संबंध दिखाते हुए अनुभवजन्य साक्ष्य मौजूद हैं। लड़कियों को शिक्षित करना लड़कों को शिक्षित करने की तुलना में परिवार के आकार के तीन गुना कम होने [8]की संभावना है। आठ साल की शिक्षा वाली लड़कियां बाद में शादी करती हैंय छोटे परिवार पर वरीयता है। ब्राजील में, अनपढ़ महिलाओं में औसतन 6.5 बच्चे हैं जहां माध्यमिक शिक्षा वाली महिलाओं के 2.5 बच्चे हैं।

महिला शिक्षा और नामांकन चित्रा:- शिक्षित माताएँ अपने बच्चों को शिक्षित करने के मूल्य को समझती हैं। भारत में टीएलसी अभियान से प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश का आंकड़ा बढ़ा है। शिक्षा ही स्त्री की बुनियादी आवश्यकता है। यह सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है। यह शिक्षा कि लाता है conscientcation, शिक्षा दुनिया के लिए भागीदारी और संसाधनों के नियंत्रण में मदद करता है।

महिलाओं की भूमिका:- अधिकांश भारतीय महिलाओं के लिए रसोई सबसे अच्छी जगह है चाहे वे काम के लिए बाहर जाती हों या नहीं, उनसे उम्मीद की जाती है कि वे यहां सेवा प्रदान करेंगीय घर की महिलाओं का काम

· घर का आयोजन

· भोजन तैयार करना और उपलब्ध कराना

· असर वाले बच्चे

· बच्चे की देखभाल

· बीमार होने पर उपस्थित होना

· संगठन में पुरुषों [9] के साथ प्रतिस्पर्धा

यदि महिलाएं घर के किसी भी काम को करने में विफल रहती हैं, तो उन्हें अक्सर समाज द्वारा दोषी ठहराया जाता हैय महिलाओं को उनके द्वारा प्रदत्त भुगतान और अवैतनिक सेवाओं के बीच संघर्ष का प्रबंधन करना होगा।

महिला और शिक्षा:- महिला शिक्षा को वैश्वीकरण के संदर्भ में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। गांधीजी द्वारा इसका सही उल्लेख किया गया है, Mentioned यदि आप किसी लड़के को शिक्षित करते हैं, तो आप केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं लेकिन यदि आप किसी लड़की को शिक्षित करते हैं, आप पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं। इसलिए, स्वतंत्रता की उपलब्धि के बाद से महिलाओं की शिक्षा के महत्व को मान्यता दी गई है।

उच्च शिक्षा के बारे में, यह देखा गया कि महिलाओं और पुरुषों की शिक्षा में कई तत्व समान होने चाहिए, लेकिन आम तौर पर सभी तरह से समान नहीं होने चाहिए, यह महिलाओं के लिए निम्नलिखित विशेष पाठ्यक्रमों की सिफारिश करता है ताकि वे अपने सामाजिक सेट में खुद को अच्छी तरह से फिट कर सकें।

· गृह अर्थशास्त्र[10]

· नर्सिंग

· शिक्षण

· ललित कला

मानव विकास के विकास और विकास के अध्ययन ने महिलाओं द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण और समान भूमिका का संकेत दिया है। पुरुष और महिलाएं मानव जाति के विकास के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण रहे हैं। इसलिए, किसी भी सभ्यता का अध्ययन उस सभ्यता में महिलाओं की भूमिका और स्थिति के अध्ययन के बिना अधूरा है।

निष्कर्ष

हम जानते हैं कि भारत में महिलाओं की शिक्षा का प्रारंभिक इतिहास मुख्यतः धार्मिक और सामाजिक कारकों से प्रभावित था। चूंकि वैदिक काल में सभी बच्चों के लिए उपनयन किया जाना था और उन्हें वैदिक मंत्रों और अनुष्ठानों का पाठ करना था। यह परंपरा बाद के वैदिक काल में जारी रही लेकिन कम उम्र में लड़कियों ने शादी के अनुबंध को कम करना शुरू कर दिया। महिलाओं की स्थिति के रूप में था अपने शासन में सबसे कम। 19 वीं शुरुआत में जब भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई थी। शैक्षिक प्रणाली का एक सर्वेक्षण किया गया था। रिपोर्टों के सर्वेक्षण में कुछ ने स्कूल में महिला विद्वानों के भाग लेने का उल्लेख किया। कला और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में महिलाओं के साथ भेदभाव परोसने वाले कुछ[11] दो लड़कियों के मार्ग में कारक और रक्षाहीन व्यवसायों के रूप में अस्तित्व के फूल का अवसर है। एक ही समय में कला और तकनीकी जानकारी के रूप में, सार्थक घटनाओं के रूप में अधिकतम पहल की जाती है, लड़कियों के आत्मविश्वास की कमी और खिलना एक नागरिक परेशानी के रूप में दिखाई देता है। इस पाठ्यक्रम की सहायता से महिलाओं को नियमित रूप से लाभदायक विस्तार से दूर किया जाता है, और देश के लाभदायक सुधार के लिए एक समारोह के रूप में दिखाई देता है। महिलाओं को महिलाओं को आंकने के लिए एक मोमबत्ती के रूप में महिलाओं के स्तरीकरण ने अधिकारियों में अधिक चैकस रहने और निर्णय लेने की क्षमता के साथ निर्णय लेने की प्रतिबद्धता को प्रभावी बनाने की दिशा में काम किया है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिए समूहों पर ताला लगाने के लिए कुछ भी कपड़े पहनने योग्य नहीं है, क्योंकि ईसाई चर्च की इमारतों ने महिलाओं के गोल्फ उपकरण, माताओं की फैलोशिप , और इसके बाद में लड़कियों के एकत्रीकरण में तुरंत योगदान दिया।

हमारी हिंदू संस्कृति में हम महिलाओं को देवी के रूप में सम्मान देते हैं। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था , "जहां महिलाओं का सम्मान किया जाता है, वहां देवता प्रसन्न होते हैं और जहां वे नहीं होते हैं, वहां काम के सभी प्रयास शून्य हो जाते हैं। देश के उस परिवार के लिए उदय की कोई उम्मीद नहीं है, जहां महिलाओं का कोई अनुमान नहीं है, जहां वे उदासी में रहते हैं। इन कारणों से उन्हें पहले उठाना पड़ता है।" स्त्री शिक्षा नवजन्म नहीं है यह पुराने जमाने से चली आ रही थी। एक लड़की को तब तक शादी करने का अधिकार नहीं था जब तक वह अपने छात्र जीवन ब्रह्मचर्य का मुकाबला नहीं करती। यह स्पष्ट रूप से पवित्र साहित्य में निर्धारित किया गया है कि पति और पत्नी को एक साथ यज्ञ या बलिदान करना चाहिए। यह स्पष्ट रूप से शामिल है कि महिला को उतना ही शिक्षित किया जाना था जितना कि पुरुष। पवित्र साहित्य में महिला विद्वानों के कई नाम दिखाई देते हैं, यह दर्शाता है कि उन समय में सामान्य साक्षरता और सांस्कृतिक शिक्षा प्राप्त करने वाली महिलाओं की संख्या काफी बड़ी रही होगी। आज की लड़की कल की महिला है इसलिए पुरुषों के लिए खुली हर प्रकार की शिक्षा भी महिलाओं के लिए खुली होनी चाहिए। अब वह स्थान जो सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का है। वे बताते हैं कि अपने घरों की चार दीवारों के बाहर महिलाओं की सेवाओं की बहुत आवश्यकता है। आधुनिक भारत में महिला शिक्षा का महत्व बहुत महत्वपूर्ण है महिलाओं के पास पुरुषों के समान बौद्धिक और नैतिक शक्तियां हैं।

भारत अब अपनी महिला को एक अमूल्य प्राकृतिक संसाधन के रूप में पहचानता है, जिसका विकास उसके भविष्य में एक निवेश है। 36 समकालीन भारतीय महिला एक नागरिक और घरेलू निर्माता दोनों है और इस क्रम में वह इन दोनों कार्यों को कुशलतापूर्वक और जिम्मेदारी से कर सकती है। उसे कम से कम एक सामान्य शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए और जहां एक विशेष और व्यावसायिक शिक्षा के लिए बुद्धिमत्ता और विशेष रूप से योग्यता को प्रकट किया जाता है। यहां तक कि जहां असाधारण क्षमता का पता नहीं चलता है, वहां एक अच्छी सामान्य शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। के। नटराजन ने एक बार कहा था कि, अगर सौ साल पहले मरने वाला

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.649 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 7, Issue 4, July 2020 |

व्यक्ति आज जीवन में आता है, तो सबसे महत्वपूर्ण और महत्वपूर्ण बदलाव जो उस पर हमला करेगा, वह है क्रांति, महिलाओं के लिए साहित्यिक दर निराशाजनक रूप से कम है। हम शायद इस स्तर पर इसके लिए जिम्मेदार कारकों में से कुछ को इंगित कर सकते हैं, जो निम्नलिखित तुलनाओं को चित्रित करके सबसे अच्छा चित्रण करते हैं। पुरुषों और लड़के के लिए शैक्षणिक संस्थान बाहर नंबर से एक करने के लिए बारह से लड़कियों और महिलाओं के लिए उन। 1960-61 के दौरान, जहां 28.6 मिलियन लड़कों का नामांकन हुआ था, केवल 13.06 मिलियन लड़कियों का नामांकन हुआ था। तीसरी पंचवर्षीय योजना (1965- 66) के अंत में, जबकि 6-14 वर्ष में लड़कों के नामांकन में 40.02 मिलियन तक की वृद्धि होने की संभावना है, लड़कियों की संख्या केवल 22.88 मिलियन होने की संभावना है। इसके अलावा महिला शिक्षकों की कमी है और लड़कियों की विशेष जरूरतों के संबंध में सामान्य समझ की कमी है।[12]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. *अग्रवाल एस. पी., अग्रवाल, जे. सी., "भारत में महिला शिक्षा, नई दिल्ली* - 1928-29 /
2. *अग्रवाल, एम., "शिक्षा और आधुनिकीकरण" नई दिल्ली*, 1986 /
3. *भटनागर, सुरेश, भारतीय शिक्षा, आज और कल, मेरठ*, 1984 /
4. *बर्न एलेन, एम., "महिला और शिक्षा", लंदन*, 1984 /
5. *घोष, एसके, "वुमन इन चेंजिंग सोसाइटी" / आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली*, 1985 /
6. *हुसैन, फ्रेड, महिला, नई दिल्ली*, 1984 /
7. *मेनन, इंडस्ट्रीज, एम., 'भारत में महिलाओं की स्थिति, प्रकाशन हाउसिंग नई दिल्ली*, 1981
8. *कुरैशी, इशरत अली, "अलीगढ़ अतीत और वर्तमान, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़*, 1992 /
9. *रेड्डी, सीआर, "शिक्षित कामकाजी महिलाओं की स्थिति, बी. आर. प्रकाशन निगम, दिल्ली*, 1986 /
10. *रॉय, शिबानी, एम., "उत्तर भारत में महिलाओं की स्थिति", बीआर प्रकाशन निगम, दिल्ली*, 1979 /
11. *रुथ, डब्ल्यूएफएफ, "बदलती इस्लामी व्यवस्था में महिलाएं, बिमलका पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली*, 1983 /
12. सिन्हा, Phupa, "काम महिलाओं के बीच संघर्ष की भूमिका", जानकी प्रकाशन रत्न, नई दिल्ली, 1987।